राजभाषा विविधा

अंक 30 राजभाषा विभाग, वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड 2017-18

राष्ट्रभाषा और राजभाषा

जब विभिन्न जाति, धर्म, मत और संप्रदाय के लोग एक साथ एकजुट होकर एक भौगोलिक सीमा के अंदर राष्ट्र का निर्माण करते हैं, तब उनके पारस्परिक संवाद की भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है ।

केंद्र तथा राज्य सरकार शासकीय पत्र-व्यवहार, राजकाज तथा अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए जिस भाषा का प्रयोग करती है, उसे राजभाषा कहते हैं ।

राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर

क्र.	राष्ट्रभाषा	राजभाषा
1	राष्ट्रभाषा सरकारी व्यवस्था और प्रयास से नहीं, बल्कि आम जनता के प्रयोग से स्वत: विकसित होती है ।	राजभाषा मुख्यत: सरकारी व्यवस्था और प्रयास पर निर्भर करती है । यह आम जनता के प्रयोग द्वारा स्वत: विकसित नहीं होती ।
2	राष्ट्रभाषा का उपयोग आम जनता करती है ।	राजभाषा का उपयोग मुख्यत: सरकारी कर्मचारी करते हैं ।
3	आम जनता अपने सामान्य कामकाज के लिए राष्ट्रभाषा का उपयोग करती है । अत: इसमें बोलचाल के सामान्य प्रचलित शब्दों का उपयोग होता है ।	सरकारी कर्मचारी शासकीय कार्य के लिए इसका उपयोग करते हैं । अत: इसमें शासकीय कार्य से संबंधित विशेष शब्दों का उपयोग अधिक होता है ।
4	आम जनता से संबंधित होने के कारण इसमें सरलता होती है ।	सरकारी कामकाज से संबंधित होने के कारण इसमें विशिष्टता होती है ।
5	राष्ट्रभाषा में बोलचाल के ऐसे शब्दों का भी उपयोग होता है जिनका एक से अधिक अर्थ हो सकता है ।	राजभाषा में अर्थ की स्पष्टता बनाए रखना आवश्यक होता है । अत: शब्दों का सामान्यत: एक ही अर्थ होता है ।

6	राष्ट्रभाषा के माध्यम से आमतौर पर सामान्य कार्य ही सम्पन्न किए जाते हैं ।	राजभाषा के माध्यम से सामान्यत: विशिष्ट कार्य संपन्न किए जाते हैं, जिनमें तकनीकी और कानूनी कार्य भी शामिल हैं ।
7	राष्ट्रभाषा में आमतौर पर शब्दों की एकरूपता बनाए रखना आवश्यक नहीं होता है । इसमें स्थानीय शब्दों के उपयोग की पूरी छूट होती है । अत: राष्ट्रभाषा की कई शैलियाँ विकसित हो जाती हैं, जैसे- बम्बईया हिंदी, कलकतिया हिंदी आदि ।	राजभाषा में शब्दों की, विशेषकर तकनीकी, प्रशासनिक एवं कानूनी शब्दावली में, एकरूपता आवश्यक होती है । इसमें स्थानीय शब्दों के उपयोग की छूट नहीं होती है । अत: हर स्थान के व्यक्ति को शब्दों की एकरूपता का निर्वहन करना आवश्यक होता है ।
8	राष्ट्रभाषा के अधिकांश शब्दों का अर्थ संदर्भ से ही स्पष्ट होता है, इसलिए राष्ट्रभाषा सरल प्रतीत होती है ।	राजभाषा के अधिकांश शब्द पारिभाषिक होते हैं । इसका अर्थ केवल संदर्भ से स्पष्ट नहीं होता । पारिभाषिक शब्दों के अर्थ सीखने ही पड़ते हैं, जिसके बिना वे कठिन प्रतीत होते हैं ।
9	राष्ट्रभाषा के उपयोग का क्षेत्र व्यापक है, क्योंकि वह देश की बहुसंख्यक जनता के व्यवहार एवं सम्पर्क की ऐसी भाषा है जो उन्हें राष्ट्रीयता का अहसास कराती है।	राजभाषा के उपयोग का क्षेत्र मुख्यत: सरकार के कार्यों तक सीमित है ।
10	राष्ट्रभाषा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व होता है ।	राजभाषा का सरकारी कामकाज की दृष्टि से विशेष महत्व होता है ।

राजभाषा विमर्श

एक राजा की व्यथा

रोड के एक मोड पर
एक राजा पड़ा मिला
बोला मियाँ देखो हमारा क्या हाल हो गया?

मुझे हँसी के साथ बचपन की कविता याद आ गई
आलू -कचालू बेटा कहाँ गए थे
बंदर की झोपड़ी में सो रहे थे
बंदर ने लात मारी रो रहे थे...
पर अब की बार लात बंदर ने नहीं

मंडी के बड़े व्यापारी और
सरकार साहबे ने मारी थी
किसान मेहनत से उगाता है
पर ठीक दाम पर बिक नहीं पता है

और फैंक दिया जाता है
रोड के किसी मोड़ पर
कुचले जाने के लिए
जहन में एक ठोर सवाल है
कौन इस ट्रेजडी का असल जिम्मेदार है?
हालाँकि कुछ कम थी
पर अगले ही पल मेरी पलकें नम थी
धरती के गर्भ से जन्मा ये राजा
जन्म लेते ही फैंक दिया जाता है रोड पर
किसी अनचाही बच्ची की तरह
तो क्या हुआ जो इसमें जीवन नहीं है
पर हर जीवन की जरूरत भी यही है ...

- डॉ. मनोज कुमार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा/जनसंपर्क)
वेकोलि मुख्यालय, नागपुर

****

व्यवहार में नम्रता

बात बहुत पुरानी है । 10-12 साल पहले की। मैं अपने एक मित्र के पासपोर्ट बनवाने के लिए रायपुर के पासपोर्ट आफिस गया था।

उन दिनों इंटरनेट पर फार्म भरने की सुविधा नहीं थी। पासपोर्ट दफतर में दलालों का बोलबाला था और खुलेआम दलाल पैसे लेकर पासपोर्ट के फार्म बेचने से लेकर उसे भरवाने, जमा करवाने और पासपोर्ट बनवाने का काम करते थे।

मेरे मित्र को किसी कारण से पासपोर्ट की जल्दी थी, लेकिन दलालों के दल-दल में फंसना नहीं चाहता था। हम पासपोर्ट आफिस पहुंच गए, लाइन में लगकर हमने तत्काल फार्म ले लिया। इस चक्कर में कई घंटे निकल चुके थे और अब हमें किसी तरह पासपोर्ट की फीस जमा करनी थी।

हम लाइन में खड़े हुए लेकिन जैसे ही हमारा नंबर आया, बाबू ने खिड़की बंद कर दी और कहा कि समय खत्म हो चुका है। अब कल आइएगा।

मैंने उनसे मिन्नते की, उनसे कहा कि आज पूरा दिन हमने खर्च किया है और बस अब केवल फीस जमा कराने की बात रह गई है। कृपया फीस ले लीजिए।

बाबू बिगड़ गया। कहने लगा, आपने पूरा दिन खर्च कर दिया तो उसके लिए वो जिम्मेवार है क्या। अरे सरकार ज्यादा लोगों को बहाल करें। मैं तो सुबह से अपना काम ही कर रहा हूँ।

मैंने बहुत अनुरोध किया पर वो नहीं माने। उसने कहा कि बस दो बजे तक का समय होता है, दो बज गए। अब कुछ नहीं हो सकता।

मैं समझ रहा था कि सुबह से दलालों का काम वो कर रहा था, लेकिन जैसे ही बिना दलाल वाला काम आया उसने बहाने शुरू कर दिए हैं। पर हम भी अड़े हुए थे कि बिना अपने पद का

राजभाषा विमर्श

इस्तेमाल किए और बिना उपर से पैसे खिलाए इस काम को अंजाम देना है।

मैं भी समझ गया था कि अब कल अगर आए तो कल का भी पूरा दिन निकल ही जाएगा, क्योंकि दलाल हर खिड़की को घेर कर खड़े रहते हैं और आम आदमी वहां तक पहुंचने में बिलबिला उठता है।

खैर, मेरा मित्र बहुत मायूस हुआ और उसने कहा कि चलो अब कल आएंगे।

मैंने उसे रोका। कहा कि रूको एक और कोशिश करता हूँ।

बाबू अपना थैला लेकर उठ चुका था। मैंने कहा नहीं, चुपचाप उसके पीछे हो लिया। वो उसी आफिस में तीसरी या चौथी मंजिल पर बनी एक कैंटीन में चला गया। वहाँ उसने अपने थैले से लंच बाक्स निकाला और धीरे-धीरे अकेला खाना खाने लगा।

मैं उसके सामने की बैंच पर जाकर बैठ गया। उसने मेरी ओर देखा और बुरा सा मुंह बनाया। मैं उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। मैंने उससे पूछा कि रोज घर से खाना लाते हों। उसने अनमने से मन से कहा कि हाँ, रोज घर से लंच लाता हूँ।

मैंने कहा कि आपके पास तो बहुत काम है। रोज बहुत से नए-नए लोगों से मिलते होंगे।

वो पता नहीं क्या समझा और कहने लगा कि हाँ मैं तो एक से बड़े एक अधिकारियों से मिलता हूँ। कई आईएएस, आईपीएस, विधायक और न जाने कौन-कौन रोज यहाँ आते हैं। मेरी कुर्सी के सामने बड़े-बडे लोग इंतजार करते हैं।

मैंने बहुत गौर से देखा,ऐसा कहते हुए उसके चेहरे पर अहं का भाव था।मैं चुपचाप उसे सुनता रहा।

फिर मैंने उससे पूछा कि एक रोटी आपकी प्लेट से मैं भी खा लूं क्या। वो समझ नहीं पाया कि मैं क्या कह रहा हूँ। उसने बस हाँ में सिर हिला दिया।

मैंने एक रोटी उसकी प्लेट से उठा ली और सब्जी के साथ खाने लगा।

वो चुपचाप मुझे देखते रहा। मैंने उनके खाने की तारीफ की और कहा कि आपकी पत्नी बहुत ही स्वादिष्ट भोजन पकाती है।

वो चुप रहा।

मैंने फिर से उसे कुरेदा। आप बहुत महत्वपूर्ण सीट पर बैठे हो। बड़े-बड़े लोग आपके पास आते हैं। तो क्या आप अपनी कुर्सी की इज्जत करते हो।

अब वो चौंका। उसने मेरी ओर देख का पूछा कि इज्जत। मतलब।

मैंने कहा कि आप बहुत भाग्यशाली हो, आपको इतनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है। आप न जाने कितने बड़े-बड़े अफसरों से डील करते हो, लेकिन आप अपने पद की इज्जत नहीं करते।

उसने मुझसे पूछा कि ऐसा कैसे

राजभाषा विभाग

कहा, आपने। मैंने कहा कि जो काम दिया गया है, उसकी इज्जत करते तो आप इस तरह सूखे व्यवहार वाले नहीं होते।

देखो। आपका कोई दोस्त भी नहीं है। आप आफिस की कैंटीन में अकेले खाना खाते हो, अपनी कुर्सी पर भी मायूस होकर बैठे रहते हो, लोगों का होता हुआ काम पूरा करने की जगह अटकाने की कोशिश करते हो।

मान लो कोई एकदम दो बजे आपके काउंटर पर पहुंचा तो आपने इस बात का लिहाज तक नहीं किया कि वो सुबह से लाइन में खड़ा रहा होगा।

अरे, आपने फटाक से खिड़की बंद कर दी। जब मैंने आपसे अनुरोध किया तो आपने कहा कि सरकार से कहो कि ज्यादा लोगों को बहाल करें।

मान लो, मैं सरकार से कह कर और लोग बहाल करा दूं, तो आपकी अहमियत घट नहीं जाएगी। हो सकता है आपसे यह काम ही ले लिया जाए। फिर आप कैसे आईएएस, आईपीएस और विधायकों से मिलोगे।

भगवान ने आपको मौका दिया है, रिश्ते बनाने के लिए। लेकिन आपका दुर्भाग्य देखों, आप इसका लाभ उठाने की जगह रिश्ते बिगाड़ रहे हो।

मेरा क्या, कल भी आ जाउंगा, परसों भी आ जाउंगा। ऐसा तो है नहीं कि आज नहीं काम हुआ तो कभी नहीं होगा। आप नहीं करोगे तो कोई और बाबू कल करेगा। पर आपके पास तो मौका था किसी को अपना एहसानमंद बनाने का। आप उससे चूक गए।

वो खाना छोड़कर मेरी बाते सुनने लगा था।

मैंने कहा कि पैसे तो बहुत कमा लोगे, लेकिन रिश्ते नहीं कमाए तो सब बेकार है। क्या करोगे पैसों का। अपना व्यवहार ठीक नहीं रखोगे तो आपके घरवाले भी आपसे दुखी रहेंगे। यार-दोस्त तो है नहीं।

ये तो मैं देख ही चुका हूँ।

उसने मेरी बातों को गौर से सुना और मनन करने लगा।

उसे इस बात का एहसास हुआ कि सामने बैठा आदमी कुछ हद तक बातें सही कह रहा है।

मन ही मन में विचार करने लगा कि बात सही है। मनुष्य के जीवन में पैसा मात्र आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जरूरी होता है, लेकिन आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने से ही मनुष्य का काम नहीं चलता। वह एक सामाजिक प्राणी है। उसे पैसों के अलावा भी समाज में अपने रिश्तों को निभाना पड़ता है। अच्छे रिश्ते कायम रखने के लिए व्यवहार का भी अच्छा होना जरूरी होता है।

मैं लगातार उसके चेहरे को देख रहा था। मैंने महसूस किया कि वो किसी

राजभाषा विधा

गंभीर चिंतन में है।

मैंने उसे सचेत करते हुए कहा कि आप क्या सोच रहे हैं।

मेरी आवाज सुनकर वो अचानक सक्ते में आकर बोला कि रिश्ते कायम करना जरूरी है। मनुष्य यह सोचकर गलती करता है कि रिश्ते केवल परिवार में ही रहते हैं, लेकिन यह मान्य तथ्य है कि सरकार द्वारा सौंपे गए दायित्वों का सकारात्मक और सभ्यता के साथ निर्वहन करके भी परोक्ष रूप से अपने रिश्ते कायम किए जा सकते हैं।

उसने अपने अहं को त्यागते हुए अपने व्यवहार में परिवर्तन करने की कसौटी को आत्मसात करने का मन ही मन निर्णय लिया।

ताबड़तोड़ खाना पूरा किया । लंच बाक्स को बंद कर थैले में रखा और अपने व्यवहार के विपरीत कहा, चलो।

वो कैंटीन से पुन: अपने ऑफिस को गया।

मैं भी उसके साथ ही नीचे उतरा और अपने मित्र के पास आकर बोला कि शायद काम बन सकता है।

हम दोनों ऑफिस के बाहर ही उसका इंतजार कर रहे थे।

तभी उसने ऑफिस की खिड़की खोली और कहा फीस के पैसे दो।

मैंने अपने मित्र से पैसे मांगे और फार्म के साथ खिड़की से उसे दिया।

मेरा मित्र उसके बदले हुए व्यवहार को देखकर मुझसे पूछने लगा कि तुमने ऐसा क्या कर दिया कि इस बाबू में इतना परिवर्तन आ गया।

मैंने अपने मित्र को बताया कि कुछ नहीं किया। उसे केवल अपने दायित्वों के बारे में बताया और रिश्ते कायम करने के भगवान द्वारा दिए गए मौके का सही उपयोग करने के संबंध में बात की है।

इसी बीच खिड़की के अंदर से मधुर आवाज के साथ फीस की रसीद का टुकड़ा बाहर आया। उसने कहा कि पासपोर्ट दिए गए पते पर आ जाएगा।

हमने भी उसे धन्यवाद दिया और प्रशन्नचित होकर वापस हो गए।

श्री के.आर. अम्बालकर,
सहायक प्रबंधक (सचिवीय-राभा),
राजभाषा विभाग, वेकोलि, मुख्यालय

****

राजभाषा विभाग

संशोधित राजभाषा नियम के अनुसार क्षेत्रवार राज्यों का विवरण

“क" क्षेत्र में आनेवाले राज्य :-

अंडमान एवं निकोबार, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड और उत्तरप्रदेश ।

“ख" क्षेत्र में आनेवाले राज्य :-

दादर एवं नगर हवेली, दमण एवं दीव, गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब ।

“ग" क्षेत्र में आनेवाले राज्य :-

आन्ध्र प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, गोवा, जम्मू एवं कश्मीर, कर्नाटक, केरल, लक्षद्वीप, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, ओदिशा, पांडिचेरी, सिक्किम, तमिलनाडु, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल।

****

आधुनिक युग की मीरा

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा हिंदी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभो में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती भी कहा है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं, जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्वयमान हाहाकार, रूदन को देखा, परखा और करूण होकर अंधकार को दूर करनेवाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और श्रृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप

राजभाषा विधा

में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

उन्होंने कड़वी बोली हिंदी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल बृजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिंदी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों को नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्य जीवन की शुरूआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परंतु उन्होंने अविवाहित की भांति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिंदी साहित्य के सभी महत्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का भी गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भांति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। वर्ष 2007 उनकी जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया।

महादेवी का जन्म 26 मार्च, 1907 को प्रात: 8 बजे फर्रूखाबाद उत्तरप्रदेश, भारत में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या साल पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अत: बाबा बाबू बाँके विहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी- महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। हेमरानी देवी बड़ी धर्म परायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थी। विवाह के समय अपने साथ सिंहासनासीन भगवान की मूर्ति भी लायी थीं। वे प्रतिदिन कई घंटे पूजा-पाठ तथा रामायण, गीता एवं विनय पत्रिका का पारायण करती थीं और संगीत में भी उनकी अत्यधित रूचि थी। इसके बिल्कुल विपरीत उनके पिता गोविंद प्रसाद वर्मा सुन्दर, विद्वान, संगीत प्रेमी, नास्तिक, शिकार करने एवं घूमने के शौकीन, मांसाहारी तथा हँसमुख व्यक्ति थे। महादेवी वर्मा के मानस बंधुओं में सुमित्रानन्दन पंत एवं निराला का नाम लिया जा सकता है, जो उनसे जीवन पर्यन्त राखी बँधवाते रहे। निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी। उनकी पुष्ट कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधती रहीं।

महादेवी जी की शिक्षा इंदौर में

राजभाषा विभाग

मिशन स्कूल में प्रारम्भ हुई। साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज, इलाहाबाद में प्रवेश लिया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरूआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1915 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कालेज में शुभद्रा कुमार चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमार चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतीं- सुनो, ये कविता भी लिखती हैं। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह नीहार व रश्मि प्रकाशित हो चुके थे।

सन 1916 में उनके बाबा श्री बाँके विहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नबाव गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। श्री वर्मा इण्टर करके लखनउ मेडिकल कॉलेज में बोर्डिंग हाउस में रहने लगे। महादेवी जी उस समय क्रास्थवेट कॉलेज, इलाहाबाद के छात्रावास में थीं। श्रीमती महादेवी वर्मा को विवाहित जीवन से विरम्ति थी। कारण कुछ भी रहा हो पर श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री-पुरूष के रूप में उनके सम्बंध मधुर ही रहे। दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था। यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी का जीवन तो एक संन्यासिनी का जीवन था ही। उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्त पर सोईं और कभी शीशा नहीं देखा। 1966 में पति की मृत्यु के बाद वे स्थाई रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं।

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, संपादन और अध्यापन रहा। इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था । इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1932 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका "चाँद" का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में नीरजा तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा

और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं, जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की और पं. इलाचन्द्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का संपादन संभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नींव रखी। इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल, 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। वे हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव से उन्होंने जनसेवा का व्रत लेकर झूसी में कार्य किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया। 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कस्बे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बँगला बनवाया था, जिसका नाम उन्होंने मीरा मंदिर रखा था। जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। शृंखला की कड़ियाँ में स्थियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निंदा की है। उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया। महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया। उनके संपूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया। 11 सितम्बर, 1987 को इलाहाबाद में रात 9 बजकर 30 मिनट पर उनका देहांत हो गया।

प्रमुख कृतियाँ

मुख्य लेख : महादेवी का रचना संसार

महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ विशिष्ट गद्यकार भी थीं। उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं :-

कविता संग्रह

नीहार (1930), रश्मि(1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (अनूदित 1959), प्रथम आयाम (1974) तथा अग्निरेखा (1974) श्रीमती

राजभाषा विभाग

महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं, जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किये गये हैं, जैसे' आत्मिका, परिक्रमा, सन्धिनी (1965), यामा (1936), गीतपर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरा और आधुनिक कवि महादेवी आदि।

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र (1941) और स्मृति की रेखाएं (1943)

संस्मरण : पथ के साथी (1956), मेरा परिवार (1972), संस्मरण (1983)

चुने हुए भाषणों का संकलन : संभाषण (1974)

निबंध : शृंखला की कड़ियाँ (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962), संकल्पिता (1969)

ललित निबंध : क्षणदा (1956)

कहानियाँ : गिल्लू

संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह : हिमालय (1963)

अन्य निबंध में संकल्पिता तथा विविध संकलनों में स्मारिका, स्मृति चित्र, संभाषण, संचयन, ददृष्टिबोध उल्लेखनीय हैं। वे अपने समय की लोकप्रिय पत्रिका "चाँद" तथा साहित्यकार मासिक की भी संपादक रहीं। हिंदी के प्रचार- प्रसार के लिए उन्होंने प्रयाग में "साहित्यकार संसद" और रंगवाणी नाटय संस्था की भी स्थापना की।

महादेवी वर्मा का बाल साहित्य

महादेवी वर्मा की बाल कविताओं के दो संकलन छपे हैं।

ठाकुरजी भोले हैं।

आज खरीदेंगे हम ज्वाला।

समालोचना :-

आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरि है। उनकी कविता में प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता वर्तमान होने के कारण भाव, भाषा और संगीत की जैसी त्रिवेणी उनके गीतों में प्रवाहित होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी के गीतों की वेदना, प्रणयानुभूति, करूणा और रहस्यवाद काव्यानुरागियों को आकर्षित करते हैं, पर इन रचनाओं की विरोधी आलोचनाएँ सामान्य पाठक को दिग्भ्रमित करती हैं। आलोचकों का एक वर्ग वह है, जो यह मानकर चलते हैं कि महादेवी का काव्य नितान्त वैयक्तिक है। उनकी पीड़ा, वेदना, करूणा, कृत्रिम और बनावटी हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे मूर्धन्य आलोचकों ने उनकी वेदना और अनुभूतियों की सच्चाई पर प्रश्न चिहन लगाया है। दूसरी ओर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक उनके काव्य को समष्टि परक मानते हैं।

शोमेर ने "दीप" (नीहार), मधुर मधुर मेरे दीपक जल (नीरजा) और मोम

राजभाषा विविधा

सा तन गल चुका है। कविताओं को उद्धत करते हुए निष्कर्ष निकाला है कि, ये कविताएं महादेवी के "आत्मभक्षी दीप" अभिप्राय को ही व्याख्यायित नहीं करतीं बल्कि उनकी कविता की सामान्य मुद्रा और बुनावट का प्रतिनिधि रूप भी मानी जा सकती है।

सत्यप्रकाश मिश्र छायावाद से संबंधित उनकी शास्त्र मीमांसा के विषय में कहते हैं- महादेवी ने वैदुष्य युक्त तार्किकता ओर उदाहरणों के द्वारा छायावाद और रहस्यवाद के वस्तु शिल्प की पूववर्ती काव्य से भिन्नता तथा विशिष्टता ही नहीं बतायी, यह भी बताया कि वह किन अर्थों में मानीवय संवेदन के बदलाव और अभिव्यक्ति के नयेपन का काव्य है। उन्होंने किसी पर भाव साम्य, भावोपहरण आदि का आरोप नहीं लगाया केवल छायावाद के स्वभाव, चरित्र, स्वरूप और विशिष्टता का वर्णन किया।

प्रभाकर श्रोत्रिय जैसे मनीषी का मानना है कि जो लोग उन्हें पीड़ा और निराशा की कवयित्री मानते हैं वे यह नहीं जानते की उस पीड़ा में कितनी आग है जो जीवन के सत्य को उजागर करती है।

यह सच है कि महादेवी का काव्य संसार छायावाद की परिधि में आता है, पर उनके काव्य को उनके युग से एकदम असम्पृक्त करके देखना, उनके साथ अन्याय करना होगा। महादेवी एक सजग रचनाकार हैं। बंगाल के अकाल के समय 1943 में इन्होंने एक काव्य संकलन प्रकाशित किया था और बंगाल से संबंधित "बंग भू शत वंदना" नामक कविता भी लिखी थी। इसी प्रकार चीन के आक्रमण के प्रतिवाद में हिमालय नामक काव्य संग्रह का संपादन किया था। यह संकलन उनके युगबोध का प्रमाण है।

गद्य साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने कम काम नहीं किया। उनका आलोचना साहित्य उनके काव्य की भांति ही महत्वपूर्ण है। उनके संस्मरण भारतीय जीवन के संस्मरण चित्र हैं।

उन्होंने चित्रकला का काम अधिक नहीं किया फिर भी जलरंगों में "वॉश" शैली से बनाए गए उनके चित्र धुंधले रंगों और लयपूर्ण रेखाओं के कारण कला के सुंदर नमूने समझे जाते हैं। उन्होंने रेखाचित्र भी बनाए हैं। दाहिनी और करीन शोमर की किताब के मुखपृष्ठ पर महादेवी द्वारा बनाया गया रेखाचित्र ही रखा गया है। उनके अपने कविता संग्रहों यामा और दीपशिखा में उनके रंगीन चित्रों और रेखांकनों को देखा जा सकता है।

पुरस्कार व सम्मान :-

उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओं से पुरस्कार व सम्मान मिले।

1943 में उन्हें " मंगला प्रसाद पारितोषिक " एवं भारत-भारती पुरस्कार से सम्मानित

राजस्थान विद्या

किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तरप्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये "पद्म भूषण" की उपाधि दी। 1979 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें परणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, 1977 में कुमाउं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा 1984 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी. लिट. की उपाधि से सम्मानित किया।

इससे पूर्व महादेवी वर्मा को "नीरजा" के लिए 1934 में "सक्सेरिया पुरस्कार", 1942 में "स्मृति की रेखाएं" के लिये द्विवेदी पदक प्राप्त हुए। यामा नामक काव्य संकलन के लिए उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान "ज्ञानपीठ पुरस्कार" प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं। 1968 में सुप्रसिद्ध भातीय फिल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण "वह चीनी भाई" पर एक बांग्ला फिल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर नीचे।

16 सितम्बर, 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रूपए का एक युगल टिकट भी जारी किया है।

महादेवी वर्मा का योगदान

साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ी बोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिंदी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा, साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्वपूर्ण काम किया, जिसने आनेवाली एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। शचीरानी गुर्टू ने भी उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है। उन्होंने अपने गीतों की रखना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है। छायावादी काव्य की समृद्धि में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की। वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख

राजभाषा विभाग

विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव-हिलोरों का ऐसा संजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावदी कवियों में उन्हें "महादेवी" बनाता है। वे हिंदी बोलने वालों में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति द्ददृढ़ता से परिपूर्ण होते थे। वे दिल्ली में 1983 में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर दिए गए उनके भाषण में उनके इस गुण को देखा जा सकता है।

यद्यपि महादेवी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उनके लेख, निंबध, रेखाचित्र, संस्मरण, भूमिकाओं और ललित निबंधों में जो गद्य लिखा है वह श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें जीवन का संपूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना और काव्य रूपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढ़कर ही जाना जा सकता है। उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता इतनी है कि वह आज भी प्रासांगिक है। समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में द्ददृढ़ता और विकास का अनुपम सामंजस्य मिलता है। सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र द्ददृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने ही पहली बार हिंदी साहित्य को दिये।

****

जब वक्त की जुरूरत बन जाओगे जनाब,
तब हर फन के हर मुकाम के सुल्तान बनोगे।

जहाँ भी जाओगे अपनों में या के ग़ैरों में,
घर ही नहीं दिल में भी महमान बनोगे॥

जब होगी सफक्कत छोटों पर बुजुर्गों के मददगार, सबके करीब सबमें अज़ीम इंसान बनोगे।

कमजोरों की मदद पर जब उठाओगे तुम कदम, जालिम की हर एक चाल पर तूफान बनोगे॥

तुमसे दिलों के ज़ख्म छिपा कर न रखेंगे,
जब ग़ैर की बातों के कदर दान बनोगे।

तुमने "जमीर" की बात अगर मान ली अगर, फिर रहबरी की खास एक पहचान बनोगे॥

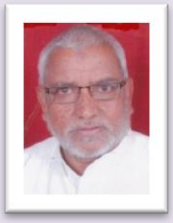

हाजी ज़मीरउद्दीन ख़िलजी
"ज़मीर"
कैम्प - कोयला विहार, डब्ल्यूसीएल, नागपुर

****

राजभाषा विधा

गुरू और चेला

पूछ पूछकर गड़बड़ लिखते, क्या गुरू और क्या चेला।
अगर लिखें ये अपनी भाषा में, क्यों कर रहे झमेला॥

आधी हिंदी, आधी इंग्लिश, समझ कुछौ न पाते।
ऐसी खिचड़ी, बोल बोलकर, अपना मान घटाते॥

नाच न जाने आंगन टेढ़ा, कठिन कह रहे हिंदी।
आती नहीं, कोई भी भाषा, देखो, जोड़ रहे हैं चिंदी॥

ये है अंतर्राष्ट्रिय भाषा, बोल रहे हैं, मूढमति।
फ्रांस, रूस और जापान में, अंग्रेजी की नहीं गति॥

सदियों तक रहे गुलाम, अंग्रेजी शासन के।
उन देशों में ही, चलता है, अंग्रेजी का शासन है॥

इंग्लैंड के पागल और मूर्ख, बोल रहे अंग्रेजी खूब।
उनको भी, बुद्धिमान मानेंगे, हमारे गुलाम सपूत॥

- दीपक अग्रवाल

****

मदर टेरेसा के अनमोल विचार

- मैं चाहती हूँ कि आप अपने पड़ोसी के बारे में चिंतित रहें, क्या आप अपने पड़ोसी को जानते हो ?
- यदि हमारे बीच कोई शांति नहीं है, तो वह इसलिए क्योंकि हम भूल गए हैं कि हम एक-दूसरे से संबंधित हैं ।
- यदि आप एक सौ लोगों को भोजन नहीं करा सकते हैं, तो सिर्फ एक को ही भोजन करवाएं ।
- यदि आप चाहते हैं कि एक प्रेम संदेश सुना जाए तो पहले उसे भेजें, जैसे एक चिराग को जलाए रखने के लिए हमें दिए में तेल डालते रहना पड़ता है
- अकेलापन सबसे भयानक गरीबी है।

राजभाषा

- प्यार करीबी लोगों की देखभाल लेने के द्वारा शुरू होता है- जो आपके घर पर है।
- प्यार हर मौसम में होने वाला फल है और हर व्यक्ति के पहुंच के अन्दर है।
- शांति एक मुस्कान के साथ शुरू होता है।
- आज के समाज की सबसे बड़ी बीमारी कुष्ठ रोग या तपेदिक नहीं है, बल्कि अवांछित रहने की भावना है ।
- प्यार के लिए भूख को मिटाना रोटी के लिए भूख की मिटने से कहीं ज्यादा मुश्किल है ।
- चमत्कार यह नहीं है कि हम यह काम करते हैं, बल्कि यह है कि ऐसा करने में हमें खुशी मिलती है।

****

राजभाषा विधा